Subject :- Sociology   Date :- 28/04/2020
Class :- D-I (H), Paper :- Ist & Subsidiary
Topic :- सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारक
By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga, 9507941619

जनसंख्यात्मक कारक

Online Study Material No:- (55)

समाजिक परिवर्तन में जनसंख्या की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। किसी भी देश की जनसंख्या कि संरचना एवं आकार उस देश की समाज व्यवस्था को अधीक प्रभावित करती है। जनसंख्यात्मक कारको के अन्तर्गत - जन्म दर, मृत्युदर, आवास, प्रवास, लिंगानुपात आयु वर्गो की स्थिती आदि को सम्मिलित किया जाता है। जो समाजिक संगठन तथा समाज की अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभाव डालते है। परिवार एवं विवाह का स्वरूप स्त्रियों की स्थिती, समाजीकरण कि प्रक्रीया, समाजिक मूल्य आदि के निर्धारण में जनसंख्या के आकार का बहुत महत्व होता है। अतः जनसंख्यात्मक कारको के अन्तर्गत जनसंख्या का आकार, घनत्व रचना एवं गतीशीलता आदि से है। जनसंख्यात्मक कारको की विवेचना करते हुये या जनसंख्यात्मक कारको की परिभाषित करते हुये Sorokin ने कहा है — "जन संख्यात्मक कारक का अर्थ जन-संख्या के आकार एवं घनत्व मे वृद्धी तथा ह्रास से है।"

जनसंख्यात्मक कारको के अन्तर्गत निम्न तत्वों को सम्मलित किया जाता है जिनका प्रभाव समाज तथा समाजिक परिवर्तन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

(1) जनसंख्या के आकार का प्रभाव :-

समाज का जीवनस्तर गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, स्वास्थ एवं अन्य समाजिक समस्याओ का जनसंख्या के आकार से घनिष्ठ संबंध है। हमारे समाजिक मूल्य, आदर्श मनोवृतिया एवं जीवन शैली सभी का प्रत्यक्ष संबंध जनसंख्या के आकार से है। राजनीतिक एवं सैनिक दृष्टीकोण से भी जनसंख्या के आकार का घनिष्ठ संबंध है। जिन देशों में जन संख्या अधिक होती है वे राष्ट्र शक्तिशाली समझे जाते है। चीन इसके उदाहरण है। इसी प्रकार जिन देशो मे जनसंख्या कम होती है वहाँ का जीवन स्तर अपेक्षा कृत ऊँचा होता है। आस्ट्रेलीया, न्यूजीलैंड, कनाडा के लोगों के जीवन स्तर चीन एवं भारत के लोगो से कई गुणा

अच्छा है जनसंख्या के आकार को दो कारक सबसे अधीक प्रभावित करते है।—

(क) जन्मदर (Birth Date)

(ख) ~~मृत्युदर~~ एवं मृत्यु दर (died date)

(ख) आप्रवास एवं उत्प्रवास

(क) जन्मदर एवं मृत्युदर।-

जब किसी देश मे मृत्यु दर अपेक्षा जन्म दर अधीक होती है तो जनसंख्या मे वृद्धी होता है और जब स्थिती विपरीत होती है तो जन घटती है लेकिन जब जन्म दर एवं मृत्यु दर मे संतुलन पायी जाती है तो उस देश की जन संख्या मे स्थिरता आती है।

pch. जिन देशो मे जनसंख्या की अधीकता होती है वहा इस प्रकार की प्रथाएँ रीती रीवाज एवं कानून पाये जाते है जिनके द्वारा जन्म दर को कम किया जा सके। जैसे की गर्भपात को वैधता मिलती है और परिवार नियोजन कार्यक्रम को प्रोत्साहीत किया जाय। इसके विपरीत जिन देशो मे जन संख्या कम होती है वहाँ स्त्रियो की प्रस्थिती ऊँच होती है और गर्भपात और परिवार नियोजन के विपरीत धारणाएँ पाई जाती है उदाहरण स्वरूप - रूस मे जनसंख्या बहुत कम होने के कारण इस तरह का व्यवहार एवं विचार पाये जाते है जब किसी देश की जनसंख्या तीव्र गती से बढ़ती है तो देश मे गरीबी बेरोजगारी बिमारी आवास एवं चिकित्सा की समस्या शिक्षा भोजन सामग्री आदि अनेक समस्याएँ है। ऐसे समाजो मे लोगो का जीवन स्तर गीर जाता है अपराध एवं भ्रष्टचार मे वृद्धी होती है विभिन्न प्रकार के नैतिकताओ का ह्रास होता है। ये सभी प्रस्थितियाँ समाजिक परिवर्तन मे उतदायी होता है।

pch. मृत्युदरकम होने से समाज मे वृद्ध जनो की संख्या बढ़ती है। ऐसे समाजो मे परम्पराओ का आदर होता है तथा नवीन विचारो का विरोध इस प्रकार जन्मदर एवं मृत्युदर के आधार पर समाजिक संरचना

समाजिक संबंधो मे परिवर्तन के फलस्वरूप समाजिक परिवर्तन कि स्थिती उत्पन्न होती है,

(ख) आप्रवास एवं उत्प्रवास।-

जनसंख्या की गतिशीलता भी समाजिक परिवर्तन के लिये उत्तदायी कारक है, दुसरे देशो से अपने देशो मे जनसंख्या के आनेको आप्रवास एवं अपने देश से दुसरे मे जाकर जनसंख्या के बसने को उत्प्रवास कहते है, जनसंख्या कि गतिशीलता दो प्रकार की होती है, दैनिक या अस्थायी और स्थायी।

आप्रवास एवं उत्प्रवास के कारण विभिन्न प्रकार की संस्कृतियो का एक-दुसरे से सम्पर्क बढ़ता है, भिन्न-2 संस्कृतीयो के समुहो के लोग एक-दुसरे के विचार, भाषा, प्रथाएँ, रीती-रीवाज, काल ज्ञान, अविष्कार, जीवशैली आदि से परिचीत होते है, जब दो भिन्न-2 संस्कृति के लोग आपस मे मिलते है तो उनमे आपस मे सांस्कृतिक तत्वो का विनिमय होता है, जिससे दोनो संस्कृतियो मे परिवर्तन होता है, और यह परिवर्तन समाजिक परिवर्तन की स्थिती को उत्पन्न करता है, Sorokin तथा अन्य अनेक विद्वानो ने बताया है कि "स्थानान्तरण स्थायी हो या अस्थायी उससे समाजिक परिवर्तन की स्थिती उत्पन्न होती है।"

उत्तरी बिहार मे श्रमिको के प्रवजन से इस क्षेत्र के ग्रामीण समाजो मे तीव्र समाजिक परिवर्तन पाया जाता है,

(ग) जनसंख्या की बनावट एवं समाजिक परिवर्तन।-

जनसंख्या का बनावट का भी समाजिक परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है, जनसंख्या की बनावट को तय करने मे लिंग अनुपात, आयु, वैवाहिक संबंध, व्यवसाय प्रजाती एवं राष्ट्रीयता आदि का विशेष महत्व है, जिनमे कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्न लिखित है।

उम्र एक महत्वपूर्ण कारक है, जो जनसंख्या

कि बनावट को प्रभावित करती है' यदि किसी देश मे वृद्ध जनो की तुलना मे युवा और बच्चो की संख्या अधीक हो जाती है तो इस प्रकार के समाजो मे परम्पराओ और प्रथाओ का प्रभाव कमने लगता है' नैतीक विचारो मे परिवर्तन हो जाता है साथ ही समाज मे नवाचारो और अविष्कारो का महत्व बढ़ जाता है' इस प्रकार के समाजो मे समाजिक, सांस्कृतीक और राजनीतिक क्रांतीयाँ आने की संभावना अधीक होती है' ऐसे समाजो मे अनुभव हीन लोगो की संख्या बढ जाती है' और अगर स्थिती इसके विपरीत हो जाय अर्थात बच्चो एवं युवको की तुलना मे वृद्ध जनो की संख्या बहुत अधीक हो जाय तो ऐसा समाज प्रायः रुढ़ीवादी समाज होता है' नवाचारो को अस्वीकार किया जाता है' और सैनिक दृष्टीकोण से भी ऐसा समाज कमजोर हो जाता है' Pch-

जनसंख्या के बनावट का दुसरा आधार लिंग अनुपात है' अर्थात किसी समाज के समाजिक संबंधो को निर्धारीत करने मे उस समाज की जनसंख्या मे स्त्री / पुरुष का अनुपात महत्व रखता है' अगर समाज मे पुरुषो की संख्या से स्त्रीयो की संख्या बहुत अधीक होती है' तो उस समाज मे न केवल स्त्रीयो की स्थिती निम्न होती है' बल्की बहुपत्नी विवाह जैसे प्रथाएँ भी प्रचलीत रहती है' अगर स्त्रीयो की तुलना मे पुरुषो की जनसंख्या अधिक हो जाय तो उस समाज मे स्त्रियो की प्रतिष्ठा ऊँची होती है' वधुमूल्य की प्रथा भी शुरु हो जाती है' पुरुषो की संख्या बहुत अधीक होने पर बहुपति विवाह जैसे प्रथाओ का चलन हो जाता है' जनसंख्या के संदर्भ मे विवाह का भी महत्व है' विशेषकर विवाह की आयु का विशेष संबंध समाजीक संबंधो से है' जैसा की स्पष्ट है' बहुपत्नी विवाह वाले समाज और बहुपति विवाह वाले समाज मे समाजिक संबंधो का प्रकार अलग-अलग तरह का होता है' लेकिन विवाह से संबंधीत एक दुसरा पक्ष है'

बाल विवाह और विलम्ब विवाह। जिस समाजो मे बाल विवाह का प्रचलन है, वहाँ शिक्षा का स्तर निम्न होता है, विशेषकर स्त्रीयो की शिक्षा नही के बराबर होती है, बाल विवाह प्रथा के कारण कम आयु मे ही परिवार का निर्माण हो जाने के कारण व्यक्तियो पर जिम्मेवारी बहुत शीघ्र आ जाती है, जिससे व्यक्तिगत विकास प्रभावित होता है, इससे समाजिक विकास पर भी प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है, ऐसे समाजो मे न केवल संतानो की संख्या अधीक होती है, बल्कि रुग्न एवं कमजोर संतानो की भी उत्पति होती है, और बाल मृत्यु दर बढ़ जाती है दुसरी ओर जिन समाजो मे बिलम्ब विवाह प्रचलीत है वहाँ एक तरफ स्त्री एवं पुरूष दोनो का ही शैक्षणिक विकास संभव हो पाता है, संतानो की संख्या कम होता है, परंतु कभी-2 बिलम्ब विवाह यौन नैतीकताओ के उल्लंघन के लिये उतरदायी होता है,

Sch-

इस प्रकार जनसंख्या के बनावट को विभिन्न आधारो मे परिवर्तन का प्रभाव न केवल समाजिक परिवर्तन कि दशा को उत्पन्न करता है, बल्कि समाजिक विकास की स्थिती को भी प्रभावित करता है, किसी भी समाज की प्रथाएँ, परम्पराएँ, समाजिक मूल्य, और नैतिकताओ का निर्धारण मे जनसंख्या की आकार और जनसंख्या की बनावट का मौलिक महत्व होता है,

– (iii) <u>जनसंख्या एवं आर्थिक परिवर्तन</u>।.

जनसंख्यात्मक कारको का प्रभाव समाज के आर्थिक पक्षो पर भी पड़ता है, जिस देश मे जनसंख्या अधीक है वहाँ ~~मृत्यु दर~~, (मजदुर) Workers सस्ते मे उपलब्ध होते है,

सस्ती वस्तुएँ उपलब्ध होती है, और उनको सैन्य शक्ति भी मजबूत हो सकती है, दुसरी ओर जनसंख्या के बढ़ने पर अधीक वस्तुओ की आवश्यकता होती है जिसके लिये नवीन अविष्कारको की आवश्यकता होती है, अधीक जनसंख्या कभी-2 राष्ट्रीय आय को बढ़ाने मे योगदान देता है, और कभी-2 स्थिती इसके विपरीत भी हो जाती है,

Scanned with CamScanner

(iv) समाजिक संगठन एवं जनसंख्या :-

जब किसी देश मे जनसंख्या के घनत्व एवं आकार मे वृद्धी होती है तो नगरीकरण मे वृद्धी होती है साथ ही श्रम-विभाजन एवं विशेषीकरण मे भी वृद्धी होती है इन सबके प्रभाव से गतीशीलता मे वृद्धी होती है समाजिक गतिशीलता मे वृद्धी होने का प्रभाव परिवार एवं विवाह जैसे समाजिक आधारो पर सबसे अधीक पड़ता है नगरीकरण और समाजिक गतीशीलता के बढ़ने से ही संयुक्त परिवारो का विघटन होता है और विवाह के परम्परागत आधारो मे परिवर्तन आने लगा है भारत के संदर्भ मे इस कारक का एक और प्रभाव पड़ा है वह है ~~स्त्रहुर्~~-जाति प्रथा की भावना का कमजोर होना। इस प्रकार जनसंख्या के स्वरूप मे परिवर्तन आने से सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव समाजिक संगठनो पर ही पड़ता है।

(v) राजनीति एवं जनसंख्या :-

राजतंत्र, प्रजातंत्र, समाजवाद पूँजीवाद आदि पर भी जनसंख्या के आकार का प्रभाव परता है। किसी देश कि जनसंख्या के बढ़ने के साथ ही उसकी सैनिक शक्ति भी बढ़ती है। ऐसे देश उपनिवेशवाद, एवं साम्राज्यवाद को बढ़ावा देते है दासप्रथा, सामन्तवाद भी जनाधिक्य का ही परिणाम है। कुछ विद्वानो ने जनाधिक्य को युद्ध का मूल कारण माना है क्योकी जनसंख्या बढ़ने के कारण आर्थिक साधनो की आवश्यकता होती है जिसे प्राप्त करने के लिये दुसरे देशो से युद्ध की जाती है।

(vi) क्रांती एवं जनसंख्या :-

जब किसी देश मे जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है या घटती है तो यह स्थिती क्रांती के लिये उत्तदायी होता है क्योकी जनसंख्या के असंतुलीत हो जाने से समाजिक आर्थिक और राजनीतिक उतार-चढ़ाव आते है। इससे कभी-2 लोगो मे असंतोष उत्पन्न होने लगता है। फलस्वरूप क्रांती का जन्म होता है।

Scanned with CamScanner

(VII) जनसंख्या एवं वैचारिकी परिवर्तन।-

जनसंख्या के आकार तथा घनत्व में वृद्धी एवं कमी के फलस्वरूप लोगों के विचारों में भी ~~सबे~~ परिवर्तन आता रहता है। जब जनसंख्या में गतीशीलता होती है, तो समाज में समानता, सहिष्णूता और समाज मे सांस्कृतिक समन्वय के विचार उत्पन्न होते है। जबकी जनसंख्या के गतीशीलता का अभाव संकीर्णता को जन्म देती है।

(VIII) समाजिक ~~परिवर्तन~~ प्रगति एवं जनसंख्या।-

विभिन्न जनसंख्या शास्त्रीयों ने समाजिक प्रगति एवं विनाश का संबंध जनसंख्यात्मक कारको से जोड़ा है। जब जनसंख्या मे अत्यधीक वृद्धी होती है, और उसे नियंत्रीत कर पाने मे लोग असफल हो जाते है तो उस समाज का विघटन होने लगता है। समाजिक संस्थाएँ शिथिल होकर व्यक्ति को नियंत्रीत करने की क्षमता खो देती है। इस प्रकार के समाजों में भ्रष्टाचार, अपराध, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि आदतों का प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि समाजिक विघटन होना स्वभाविक है।

इस प्रकार, समाजिक परिवर्तन कि स्थिती को उत्पन्न करने मे जनसंख्या संबधी कारणो का अत्यधीक महत्वपूर्ण है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U